हिन्दी प्रतिष्ठा
स्नातक खण्ड-III
पंचम पत्र

प्रश्न 1: सुमित्रानन्दन पंत के काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों और विशेषताओं का विवेचनात्मक

उत्तर- पन्त छायावाद के प्रमुख आधार स्तम्भ माने जाते हैं। उन्हें 'प्रकृति का सुकुमार कवि कहा जाता है। वे एक गम्भीर विचारक और कवि हैं। उनकी मानवतावाद में अटूट आस्था है। इनके काव्य की प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियाँ तथा विशेषताएँ इस प्रकार हैं:-

(1) प्रकृति वर्णन - पन्त का जन्म प्रकृति की गोद में हुआ था। उनके हृदय पर प्रकृति के कोमल रूप का बड़ा प्रभाव पड़ा जिसके कारण उनके काव्य में प्रकृति का चित्रण सुकुमार रूप में हुआ है।

(2) शृंगारिकता एवं सौन्दर्य भावना - कवि पन्त में शृंगार और सौन्दर्य की ये भावनाएँ मिलती हैं। पंत की सौन्दर्य-भावना मांसल रूप की मोहताज नहीं है।

(3) राष्ट्र प्रेम - पन्त के काव्य में राष्ट्र प्रेम की श्रेष्ठ भावनाएँ भी मिलती हैं। पन्त का युग स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए चलाये जा रहे आंदोलनों का युग था। कवि पंत भी इस प्रभाव से अछूते न रह सके।

(4) आत्माभिव्यक्ति - अन्य छायावादी कवियों की भाँति पंत के काव्य में भी व्यक्ति भावनाओं का प्रकाशन हुआ है।

(5) रहस्यवाद - पंत के काव्य में किसी अज्ञ शक्ति के आभास का संकेत मिलता। प्रकृति के कण-कण में किसी अदृश्य शक्ति का वास है, जो हमें प्रेरित कर रहती है।

(6) वेदना और निराशा - अन्य छायावादी कवियों की भांति ही पंत के काव्य में भी वेदना और निराशा पाई जाती है। उसकी वेदना भी सूक्ष्म और अमूर्त है। जगत की परिवर्तनशीलता को देखकर कवि के मन में वेदना के भाव जागृत होते हैं।

(7) भाषा - पंत की भाषा सरस, सरल तथा सुकोमल, संस्कृतनिष्ठ, खड़ी बोली है। इन्होंने खड़ी बोली को भी ब्रजभाषा जैसा माधुर्य और कोमलता प्रदान की है तथा खड़ी बोली को संगीतात्मकता से परिपूर्ण कर दिया है।

(8) शैली - पंत की शैली पर संस्कृत, बंगला और अंग्रेजी के कवियों का प्रभाव है।

हिन्दी प्रतिष्ठा
स्नातक खण्ड-III
पंचम पत्र

प्रश्न 21: सुमित्रानन्दन पंत के काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों और विशेषताओं का विवेचन कीजिए

उत्तर- पन्त छायावाद के प्रमुख आधार स्तम्भ माने जाते हैं। उन्हें 'प्रकृति का सुकुमार कवि कहा जाता है। वे एक गम्भीर विचारक और कवि हैं। उनकी मानवतावाद में अटूट आस्था है। इनके काव्य की प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियाँ तथा विशेषताएँ इस प्रकार हैं:-

(1) प्रकृति वर्णन - पन्त का जन्म प्रकृति की गोद में हुआ था। उनके हृदय पर प्रकृति के कोमल रूप का बड़ा प्रभाव पड़ा जिसके कारण उनके काव्य में प्रकृति का चित्रण सुकुमार रूप में हुआ है।

(2) शृंगारिकता एवं सौन्दर्य भावना - कवि पन्त में शृंगार और सौन्दर्य की ये भावनाएँ मिलती है। पंत की सौन्दर्य-भावना मांसल रूप की मोहताज नहीं है।

(3) राष्ट्र प्रेम - पन्त के काव्य में राष्ट्र प्रेम की श्रेष्ठ भावनाएँ भी मिलती हैं। पन्त का युग स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए चलाये जा रहे आंदोलनों का युग था। कवि पंत भी इस प्रभाव से अछूते न रह सके।

(4) आत्माभिव्यक्ति - अन्य छायावादी कवियों की भाँति पंत के काव्य में भी व्यक्तिगत भावनाओं का प्रकाशन हुआ है।

(5) रहस्यवाद - पंत के काव्य में किसी अज्ञात शक्ति के आभास का संकेत मिलता है। प्रकृति के कण-कण में किसी अदृश्य शक्ति का वास है, जो हमें प्रेरित करती रहती है।

(6) वेदना और निराशा - अन्य छायावादी कवियों की भांति ही पंत के काव्य में भी वेदना और निराशा पाई जाती है। उसकी वेदना भी सूक्ष्म और अमूर्त है। जगत की परिवर्तनशीलता को देखकर कवि के मन में वेदना के भाव जाग्रत होते हैं।

(7) भाषा - पंत की भाषा सरस, सरल तथा सुकोमल, संस्कृतनिष्ठ, खड़ी बोली है। इन्होंने खड़ी बोली को भी ब्रजभाषा जैसा माधुर्य और कोमलता प्रदान की है तथा खड़ी बोली को संगीतात्मकता से परिपूर्ण कर दिया है।

(8) शैली - पंत की शैली पर संस्कृत, बंगला और अंग्रेजी के कवियों का प्रभाव है।

स्नातक खण्ड-3
हिन्दी प्रतिष्ठा
पंचम पत्र

प्रश्न 5 • सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी का जीवन परिचय लिखें।

उत्तर आधुनिक युग के नये कविता में महाप्राण निराला सदा निराले रहे हैं। उन्होंने और अपने काव्य के सम्बन्ध में सूत्र रूप में कह दिया था कि आज "मयुर-व्याल पूंछ से जुड़े हुए हैं।

उन्हें स्वरूप और विद्रूप दोनों से समान प्यार है। अपनी आधुनिकता के कारण आधुनिकतम, किन्तु वेदान्त, दर्शनि तथा वीर पूजा सम्बन्धी भावना के कारण पुरातन बने रहे हैं। वह और वह घोर अहंवादी हैं और दूसरी ओर अपनी उदार मनः संवेदना के कारण वह पद दलितों के हिमायती हैं।

इनका प्रथम काव्य संग्रह परिमल प्रकाशीत हुआ। इनके अन्य काव्य अनामिका, तुलसीदास, बेला, नये पते, तुलसीदास के पश्चात में प्राय: छायावाद की सभी प्रवृत्तियाँ देखी जा सकती है। इस रचना में प्रेम-सौन्दर्य, करुणा, और रहस्य-भावना की मार्मिक अभि-व्यंजना हुई है। लोक प्रियता की दृष्टि से अनामिका बहुत प्रसिद्ध हुई।

कुकुर-मुत्ता, अणिमा, नये पत्ते और अर्चना में प्रगतिशील कविता की सभी प्रवृत्तियाँ दृष्टि गोचर होती है। कुकुरमुत्ता गुलाब से नि:शंक भाव से कहता है -

अब सुने वे गुलाब,
भूल मत गर पाई खुशबु रंगोआब।

हिन्दी के कुछ आलोचकों ने निराला के काव्य पर क्लिष्टता का आरोप करते हुए निराला को कठिन काव्य का प्रेत कहा है, किन्तु यह नितान्त अनुचित है। निराला में बहुवस्तु-स्पर्शिनी प्रतिभा है। उन्होंने हिन्दी के नवीन मुक्त छंद प्रदान किये है। हिन्दी के आधुनिक कवियों में से निराला जी का व्यक्तित्व सबसे अधिक विद्रोही और प्रखर है। निराला को छोड़कर शायद ही हिन्दी के किसी अन्य कवि को जीवन के इतने वैषम्यों और विरोधों का सामना करना पड़ा हो। निराला ने प्रलयंकर शिव के समान स्वयं कटु गरल पान करके हिन्दी काव्य जगत् को पीयुष वितरित किया। निराला के कृतित्व और व्यक्तित्व का मूल्यांकन कवि पंत की निम्नलिखित पंक्तियों में देखिये -

"छंद बंध ध्रुव तोड़, फोड़ कर पर्वतकारा
अचल रूढ़ियों को, कवि, तेरी कविता धारा